अध्याय 5

भारतीय समाज में नए विचार

अन्नू, एक दिन सुबह–सुबह स्कूल जाने के लिए जल्दी तैयार हो गई। फिर उसने कुछ फूल–पत्ती भी चुन डाले, क्योंकि उसके स्कूल में आज गुरु घासीदास जयंती का उत्सव मनाया जाना था। उसने फूलों की माला बनाते हुए अपने पिता जी से पूछा– ''पिता जी! गुरु घासीदास जी कौन थे ?

उन्होंने बताया– ''बेटी! गुरु घासीदास जी छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध समाज सुधारक एवं संत थे। उनका जन्म 18 दिसंबर 1756 ई. में रायपुर जिले (वर्तमान में बलौदाबाजार जिला) के गिरौदपुरी गाँव में हुआ था। उन्होंने तपस्या के द्वारा सत्य का ज्ञान प्राप्त किया और 'सतनाम–पंथ' चलाया। वे सत्य को ही ईश्वर का रूप मानते थे। उनके विचार में सभी जाति और धर्म समान थे।

अन्नू ने पूछा– यह किस समय की बात है ?

पिताजी... ''यह 19वीं सदी की बात है जब देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अनेक नए विचारों का प्रसार हुआ। नव–जागरण का मुख्य प्रभाव सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों पर ही था।''

''यह 'नव–जागरण' क्या है ?'' अन्नू के इस सवाल का जवाब देते हुए, पिता जी ने कहा– सुनो बेटी! इस समय तक लगभग पूरे भारत में अँग्रेजों का शासन था। उन्होंने शासन में अपनी सुविधा के लिए अँग्रेजी शिक्षा प्रारंभ की। अँग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों को भी पश्चिमी देशों की ''स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, लोकतंत्र, तार्किकता तथा वैज्ञानिकता जैसे आधुनिक विचारों का परिचय मिला। ये विचार पश्चिमी आधुनिक सभ्यता के आधार थे।''

लोगों ने समाज में फैले आडंबर, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, जाति–प्रथा जैसे दोषों में सुधार की जरूरत समझी। इसलिए सामाजिक सुधार के साथ–साथ धार्मिक सुधारों के लिए भी उपाय होने लगे। इसके अंतर्गत प्राचीन धर्म–ग्रंथों और दर्शन–शास्त्रों के अध्ययन पुनः शुरू हुए। इन ग्रंथों के प्रमाणों के आधार पर सामाजिक एवं धार्मिक दोषों में सुधार हेतु अनेक नए–नए विचार किए गए। इन विचारों को प्रभावशाली लेखों और प्रवचनों के द्वारा आम जनता तक पहुँचाने के प्रयास हुए ताकि उनमें भी नव–जागरण आ सके। इस प्रकार तत्कालीन भारत की आधुनिकता के लिए शुरू हुए इस वैचारिक जागरण को ही 'भारतीय नव–जागरण' या 'भारतीय–पुनर्जागरण' कहते हैं।

अन्नू सहमति में सिर हिलाते हुए उठी और स्कूल चली गई। वहां दीदी ने जयंती समारोह के दौरान समझाया–

बच्चो, 19वीं सदी के भारत में विभिन्न समाज सुधार के कार्यों की शुरुआत हो चुकी थी।

तभी आयुष ने पूछा– दीदी, इन सुधार कार्यों की शुरुआत कैसे हुई थी? दीदी ने समझाया– बच्चो समाज सुधार के कार्यों की शुरुआत बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र आदि प्रांतों के मध्यमवर्गीय लोगों द्वारा हुई थी। ये लोग अँग्रेजी शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा जैसे विचारों से अवगत हुए थे। ये भारतीय समाज में भी नया सुधार और विचार लाना

चाहते थे। बंगाल में राजा राममोहन राय द्वारा समाज सुधार हेतु पहला कदम उठाया गया था। इसलिए उन्हें पुनर्जागरण का अग्रदूत कहा जाता हैं। वे चाहते थे कि भारत के अन्य लोग भी पश्चिमी देशों की आधुनिकता के बारे में जान सकें, इसलिए उन्होंने अँग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। उन्होंने कलकत्ता में एक अँग्रेजी स्कूल चलाया और वेदांत कॉलेज की स्थापना की। राजा राममोहन राय ने समाज सुधार हेतु विभिन्न धर्म–ग्रंन्थों का बँगला भाषा में अनुवाद किया। ताकि स्थानीय लोग भी उन ग्रंथों का सही ज्ञान प्राप्त कर सकें। उन्होने सुधार कार्यों में तेजी लाने के लिए 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने इस मंच के माध्यम से मूर्ति–पूजा एवं आडंबरों का विरोध किया। इसी तरह पंजाब में दयानंद सरस्वती ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। इसके माध्यम से मूर्तिपूजा, आडम्बरों, छुआछूत एवं अन्य धार्मिक अंधविश्वासों का विरोध किया गया। इन सुधारकों का विचार था कि नारी सुधार के बिना समाज–सुधार अधूरा है।

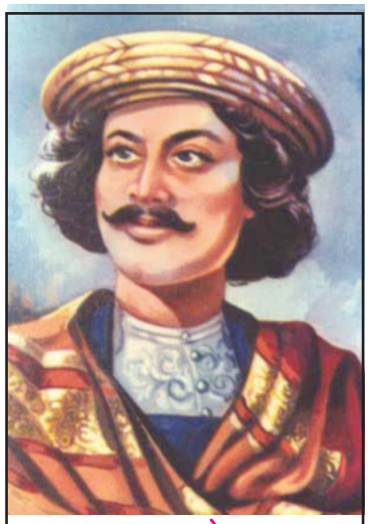
राजा राममोहन राय

स्वामी दयानंद सरस्वती

क्या उस समय नारियों की स्थिति बहुत ही खराब थी ? अन्नू द्वारा आश्चर्य से पूछे गए इस सवाल का जवाब देते हुए दीदी ने समझाया– हाँ बच्चो, 19वीं सदी के शुरुआत में नारियों की स्थिति बहुत ही खराब थी। बाल–विवाह प्रथा के अनुसार बचपन में ही लड़कियों का विवाह हो जाता था। कम उम्र की लड़कियों का विवाह अधिक उम्र के पुरुषों से कर दिए जाने के कारण कितनी ही लड़कियाँ बचपन में ही विधवा हो जाती थीं। अधिकांश स्थानों में विधवा को अपने मृत पति के साथ चिता में जलकर सती होने के लिए विवश किया जाता था। जीवित विधवाओं को एक समय का भोजन, सफेद कपड़े और अशुभ की संज्ञा के साथ कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ता था।

चर्चा करें–आज के समाज में भी इनमें से महिलाओं की कौन–कौनसी समस्याएं देखने को मिलती हैं ?

इसके अलावा उस समय बहु–विवाह प्रथा के अनुसार एक पति की कई पत्नियाँ होती थीं। अक्सर कन्या के जन्म को अशुभ मानकर उसका वध कर दिया जाता था। दहेज प्रथा के कारण गरीब लड़कियों का विवाह नहीं हो पाता था। नारियों को न तो शिक्षा दी जाती थी और न ही विकास का कोई अवसर दिया जाता था। इन सब कारणों से समाज में उनका अपना कोई भी स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

लेकिन, अब ऐसा नहीं है। आज के समाज में महिलाओं को विकास के कई अवसर मिल रहे हैं। ये सब समाज सुधारकों के जोरदार प्रयासों से ही संभव हुआ है। सबसे पहले राममोहन राय ने सती प्रथा को बंद करवाने के लिए समाज में विचार (वाद–विवाद) आरंभ कराया। इसमें शास्त्रों के प्रमाणों के आधार पर सती प्रथा को अमानवीय और धर्म विरुद्ध बताने की कोशिश की गई।

उन्होंने इस अमानवीय प्रथा को बंद कराने के लिए अँग्रेज सरकार से भी प्रार्थना की। इन्हीं प्रयासों के कारण अंततः सन् 1829 ई. में गवर्नर जनरल बिलियम बैंटिक ने सती प्रथा को बंद करने के लिए एक कानून लागू किया।

दीदी ने आगे कहा– दयानंद सरस्वती ने भी बाल–विवाह, कन्या–वध आदि प्रथाओं का विरोध किया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह और नारी शिक्षा का भी समर्थन किया था।

''लेकिन विधवाओं का दोबारा विवाह कैसे संभव हो सका ?'' अंजली ने पूछा। तब दीदी ने बताया– बच्चों ! उस समय बंगाल में ईश्वरचंद विद्यासागर नामक समाज सुधारक हुए। उन्होंने **विधवा–पुनर्विवाह** को वैध बनाने के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। उनके इस आन्दोलन को बंगाल में व्यापक समर्थन मिला। इसके अलावा महाराष्ट्र में पंडित विष्णु शास्त्री ने स्वयं एक विधवा से विवाह कर समाज में उदाहरण प्रस्तुत किया। रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने रूढ़िवादियों के विरोध के बावजूद अपनी विधवा बेटी का पुनः विवाह कराया। महादेव गोविंद रानाडे ने भी समर्थन किया। आंध्रप्रदेश में भी वीरेशलिंगम द्वारा विधवा–पुनर्विवाह का समर्थन किया गया। परिणामस्वरूप, सन् 1856 में विधवा–पुनर्विवाह कानून लागू हो गया।

आजकल बाल–विवाह, सती–प्रथा एवं दहेज–प्रथा आदि पर कानूनी रूप से पाबंदी लगा दी गई है।

अब अवंतिका ने पूछा, दीदी, बताइये कि बाल–विवाह, बहु–विवाह तथा दहेज–प्रथाओं का विरोध कैसे व्यापक हुआ ?

दीदी बताने लगीं – केशवचंद्र सेन, ईश्वरचंद विद्यासागर आदि ने **बाल–विवाह** प्रथा के दोषों के बारे में लोगों को समझाया। बहरामजी मालाबारी ने विवाह के लिए लड़के–लड़कियों की न्यूनतम आयु निश्चित करने की माँग की। अंततः सन् 1929 में शारदा एक्ट द्वारा बाल विवाह प्रथा में सुधार हुआ। इसके अनुसार विवाह के लिए न्यूनतम आयु 14 वर्ष निश्चित की गई थी, जिसे आजादी के बाद लड़कियों के लिए 18 वर्ष और लड़कों के लिए 21 वर्ष कर दिया गया है। इस प्रकार जन–जागरण एवं शिक्षा के प्रभाव से **बहु–विवाह** एवं **कन्या वध** प्रथाएँ भी समाप्त होने लगीं। साथ ही **दहेज प्रथा** का भी विरोध होने लगा। इन कुप्रथाओं को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए आज भी पर्याप्त जन–जागरण एवं शिक्षा की जरूरत है।

केशवचंद्र सेन

विचार करें –

1. क्या आज भी बाल–विवाह होते हैं ? यदि हाँ तो उन्हें कैसे समाप्त किया जा सकता है ?
3. क्या आज कन्या जन्म को अशुभ माना जाता है यदि हाँ तो इस भावना को कैसे बदला जा सकता है ?
3. हमेशा दहेज प्रथा का विरोध हुआ हैं, फिर भी इसका प्रचलन क्यों है ?

अन्नू ने याद दिलाया, ''दीदी! समाज सुधारकों ने तो **नारी शिक्षा** के लिए भी प्रयास किया था।'' तब दीदी ने कहा– ''हाँ अन्नू ! लगभग सभी समाज सुधारकों का विचार था कि नारी को शिक्षा देने से उनमें आत्मविश्वास जागृत होगा। वह समाज में अपनी भूमिका सार्थक ढंग से निभा पाएगी और यह केवल महिला के विकास के लिए ही नहीं पूरे समाज के विकास के लिए भी जरुरी है। ईश्वरचंद विद्यासागर के प्रयास से सन् 1849 ई. में कलकत्ता का बेथन स्कूल खुला। यह बालिकाओं का पहला स्कूल था। सामाजिक विरोधों और उपेक्षाओं को सहकर भी लड़कियों ने स्कूल में दाखिला लिया तथा शिक्षा प्राप्त करने का साहस दिखाया। फलतः विद्यासागर ने अनेक बालिका स्कूल खोले। इसी प्रकार उत्तर भारत में दयानंद सरस्वती और उनके आर्य समाज द्वारा बालक बालिकाओं के लिए अनेक स्कूल तथा कॉलेज खोले गए। इनके अलावा, सर सैयद अहमद खाँ ने भी मुस्लिम समाज के विकास के लिए अलीगढ़ आंदोलन चलाया। उनका विचार था कि लड़कों के साथ–साथ लड़कियाँ भी स्कूल तथा कॉलेजों में आधुनिक शिक्षा प्राप्त करें।

इस समय महाराष्ट्र में भी नारी शिक्षा के लिए अनेक प्रयास हुए। ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्री बाई द्वारा पूना में बालिका स्कूल खोला गया। इसमें निम्न जाति की बालिकाओं को विशेष रूप से प्रवेश दिया गया। अब बालिकाओं के लिए न केवल प्राथमिक शिक्षा, बल्कि उच्च शिक्षा का भी समर्थन होने लगा। गोपाल गणेश आगरकर ने तो नौकरियों एवं विभिन्न उद्यमों के लिए भी बालिका शिक्षा का विचार रखा था। हमारे समाज सुधारकों ने समाज के सम्पूर्ण विकास और नारी समस्याओं का स्थायी हल, उन्हें पुरुषों के समान शिक्षा और सामाजिक अधिकार दिये जाने में ही देखा।

नारी सुधार कार्यक्रमों को रूढ़िवादियों का भारी विरोध झेलना पड़ा। फिर भी कई माता–पिता ने हिम्मत करके अपनी बेटियों को पढ़ाया। ऐसे ही एक परिवार की बेटी रमाबाई की कहानी सुनिए रमाबाई का जन्म सन् 1856 में हुआ था। उनके पिता अनंत शास्त्री महाराष्ट्र के एक पारंपरिक ब्राह्मण थे। उन्होंने अपनी पत्नी को संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। इससे उनका घोर विरोध हुआ। उन्हें गाँव छोड़कर जाना पड़ा और जंगल में कुटिया बनाकर रहना पड़ा। वहीं पर रमाबाई का जन्म हुआ। अनंत शास्त्री ने अपनी बेटी को भी संस्कृत सिखाई। जब रमाबाई केवल 16 वर्ष की थी, तभी उनके माता–पिता दोनों का देहांत हो गया। अनाथ रमाबाई व उनका भाई जगह–जगह भटकते रहे। किसी ने उन्हें आश्रय

ज्योतिबा फुले

नहीं दिया, क्योंकि उन दिनों पढ़ी–लिखी लड़की से सब कतराते थे।

पंडिता रमाबाई सरस्वती

रमाबाई घूमते–घूमते कलकत्ता पहुँची, वहाँ उनका स्वागत हुआ। वहाँ राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आदि से प्रभावित कई लोग थे। वे महिलाओं के बारे में नए विचार रखते थे। वहाँ रमाबाई ने कई जगहों पर संस्कृत में नारी सुधार संबंधी भाषण दिये। कलकत्ता के लोगों ने उन्हें 'पंडिता' व सरस्वती की उपाधि दी। अब वे पंडिता रमाबाई सरस्वती कहलाने लगीं। उन्होंने विधवा महिलाओं को शिक्षित करने के लिए 'शारदा सदन' नामक आश्रम व स्कूल खोला। वे चाहती थीं कि महिलाएँ सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में भी खुलकर भाग लें। इस प्रकार 19वीं सदी में नारी सुधार के क्षेत्र में अनेक प्रयास हुए। मगर इस क्षेत्र में अभी भी बालिका शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ।

अवंतिका ने फिर पूछा– ''क्या सुधारकों ने जाति प्रथा को भी मिटाने का प्रयास किया था?'' दीदी ने कहा– हाँ! जाति प्रथा के कारण समाज उच्च जाति और निम्न जाति के दो वर्गों में बँट गया था। निम्न जातिवाले मंदिरों में नहीं जा सकते थे। वे कुएँ से पानी नहीं भर सकते थे। उन्हें तुच्छ समझा जाता था। रामकृष्ण मिशन जैसी कई संस्थाओं ने जाति प्रथा को कड़ी चुनौती दी। ब्रह्म समाज के प्रभाव से महाराष्ट्र में भी परमहंस सभा का गठन हुआ। इसके सदस्य विभिन्न जाति के लोग थे। इसकी बैठकें रूढ़िवादियों के डर से गुप्त रूप से की जाती थीं। सन् 1865 में इसका पुनर्गठन 'प्रार्थना समाज' के रूप में किया गया था जिसके प्रमुख नेता महादेव गोविंद रानाडे थे। उन्होंने जातिगत भेदभाव और छुआछूत की घोर निन्दा की। माली जाति में जन्म लेनेवाले ज्योतिबा फुले ने तो निम्न जाति के उद्धार के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। अपने प्रयासों में तेजी लाने के लिए सन् 1873 में सत्यशोधक–समाज की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य कार्य निम्न जाति के लोगों को समानता का अधिकार दिलाना था। इसने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने तथा दलित जाति के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की नियुक्ति किए जाने की मांग की। उन्होंने विभिन्न नाटकों एवं लेखों के द्वारा भी जाति–प्रथा के विरुद्ध जन–जागरण लाने का प्रयास किया।

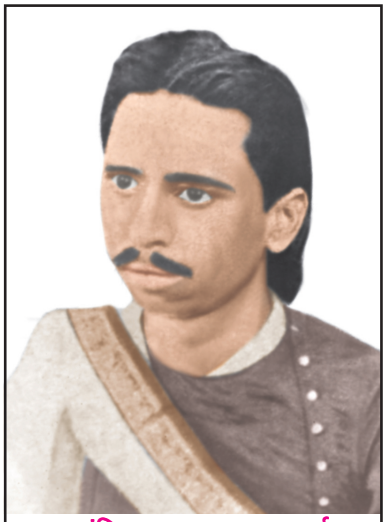
पंडित सुन्दरलाल शर्मा

20वीं सदी में महात्मा गांधी ने भी जाति प्रथा पर चोट की। उन्होंने इनके उद्धार के लिए अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। हमारे छत्तीसगढ़ में भी इन जातियों के उद्धार के लिए पंडित सुन्दरलाल शर्मा ने अनेक प्रयास किए। उन्होंने सभी जातियों के लोगों को जनेऊ धारण करवाया तथा राजिम के राजीवलोचन मंदिर में प्रवेश दिलाया।

महाराष्ट्र के डा. भीमराव अंबेडकर ने कठिन परिश्रम से इंग्लैंड में कानून की उच्च शिक्षा प्राप्त की और भारत लौटने पर स्वयं को निम्न जाति के उद्धार के लिए समर्पित कर दिया। वे मानते थे कि निम्न जातियों को अपने उद्धार के लिए शिक्षित और संगठित होना चाहिए । उनको राजनैतिक भागीदारी करना चाहिए। अतः उन्होंने निम्न जाति के लोगों के लिए अलग से निर्वाचन की माँग की। भारत के संविधान निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। इस प्रकार अनेक भारतीय समाज सुधारकों के विभिन्न प्रयासों से निम्न वर्ग के लोगों की सामाजिक स्थिति में भी सुधार दिखाई देने लगा। परन्तु जाति–प्रथा को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए आज भी समाज में पर्याप्त जन–जागरण की जरूरत है।

यद्यपि सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव शहरों तक ही सीमित रहा। तथापि सुधारवादियों का ध्यान पूरे देश को नए विचारों से आधुनिक बनाने पर था।

अभ्यास प्रश्न

PRLF J2

1. खाली स्थानों को भरिए –

1. शारदा एक्ट 1929 द्वारा ..... पर रोक लगाई गई।
2. सती प्रथा को बंद करवाने वाले समाज सुधारक ..... थे।
3. आंध्रप्रदेश के एक प्रसिद्ध समाज सुधारक ..... थे।
4. ..... ने अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना की।
5. छत्तीसगढ़ में निम्न वर्ग की स्थिति सुधारने का कार्य ..... ने किया।
6. गुरुघासीदास का जन्म बलौदाबाजार जिले के ..... में हुआ था।

2. उचित संबंध जोड़िए –

1. राजा राममोहन राय	–	सत्यशोधक समाज
2. दयानंद सरस्वती	–	प्रार्थना समाज
3. सर सैयद अहमद खाँ	–	ब्रह्म समाज
4. महादेव गोविंद रानाडे	–	आर्य समाज
5. ज्योतिबा फुले	–	अलीगढ़ आंदोलन

3. प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. गुरु घासीदास जयंती कब मनाई जाती है?
2. सती–प्रथा निषेध कानून कब और किस गर्वनर जनरल ने लागू किया था?
3. विधवा–पुनर्विवाह कानून कब और किसके नेतृत्व में लागू हुआ था?

4. बाल विवाह प्रथा कब और किस एक्ट के द्वारा समाप्त हुई थी?
5. प्रथम बालिका स्कूल कब और कहाँ खुला था?
6. अँग्रेजी शिक्षा से भारतीयों को किन–किन बातों की जानकारी मिली।
7. सतनाम पंथ के दो प्रमुख सिद्धांत बताइए?
8. विधवा–पुनर्विवाह कैसे संभव हुआ था?
9. जाति–प्रथा के विरोध में ज्योतिबा फुले के योगदान को बताइए।
10. नारी शिक्षा हेतु विभिन्न प्रयासों का उल्लेख कीजिए।
11. जातिप्रथा को पूरी तरह समाप्त करने के लिये आज भी समाज में किसकी आवश्यकता है ?
12. आपको लगता है कि बाल विवाह गलत और विधवा पुर्नविवाह सही है कैसे ? इस पर अपने विचार लिखिए।

5. टिप्पणी लिखिए –

अ. रमा बाई　　ब. डॉ. भीमराव अम्बेडकर

6. योग्यता विस्तार –

1. पंडिता रमाबाई सरस्वती जैसी किसी अन्य स्थानीय महिला समाज सुधारक के बारे में पता कीजिए तथा उसका संक्षिप्त जीवन परिचय प्राप्त कीजिए।
2. अपने शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए –
   - अ. दहेज प्रथा – एक सामाजिक अभिशाप है।
   - ब. जाति प्रथा – मानवता के मार्ग में बाधक तत्व है।